B.A. III Honours
Paper V
Sociology

MAHATMA GANDHI

19वीं शताब्दी तथा 20वीं शताब्दी के मध्य संसार में बहुत सारे महा पुरुषों ने जन्म लिया और उन लोगों ने अपने अपने युग में किसी न किसी रूप में समाज को लोगों प्रभावित किया लेकिन उन महान पुरुषों में से किसी एक ने भी समाज के व्यक्तियों के विचारों एवं व्यवहारों को उतना अधिक प्रभावित नहीं किया जितना कि महात्मा गांधी के विचारों का प्रभाव समाज पर पड़ा। उनके विचारों ने सम्पूर्ण मानव जगत को प्रभावित किया है।

भारत में महात्मा गांधी को उन प्रमुख विचारक में सम्मिलित किया जाता है जिन्होंने राष्ट्र की सामाजिक संरचना, नैतिक आदर्शों तथा राजनीति को एक नया मोड़ देने का प्रयत्न किया। उनके विचारों के कारण उन्हें भारत का राष्ट्रपिता कहा जाता है। उनके सामाजिक विचारों को लेकर विद्वानों के बीच मतभेद पाया जाता है। यह कहा जाता है कि उनके सामाजिक विचार न तो प्रयोगसिद्ध हैं और न ही किसी समाजशास्त्रीय सिद्धान्त पर आधारित हैं। परन्तु गांधी जी ने जिन व्यापक अनुभवों और संस्थाओं के पश्चात सामाजिक जीवन को नजदीक से परखा, इसलिये उनके विचारों को प्रयोगसिद्ध न मानना गलत है।

Mahatma Gandhi का जन्म 2, October 1869 ई० को हुआ। 1888 में वकालत करने को England चले गये 1891 में वकालत पास कर भारत लौटे और 1893 अफ्रीका चले गये वहाँ उन्होंने अंग्रेजों के अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई।

विश्व में जब वापस लौटे तो तुरन्त ही यहाँ की राजनीति में प्रवेश किया और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया और 1947 में देश को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद करा लिया। गाँधी जी द्वारा प्रस्तुत सिद्धान्तों की चर्चा इस प्रकार की जा सकती है।

SAVODAYA

शाब्दिक रूप से सर्वोदय का अर्थ सभी का उदय अथवा सभी प्राणियों का विकास समझा जाता है। इस प्रकार महात्मा गाँधी ने अपने इस सिद्धान्त में यह स्पष्ट किया कि सर्वोदय विश्व के विकास की एक स्वाभाविक विवेचना से सम्बन्धित है। उन्होंने सर्वोदय की अवधारणा को तीन मुख्य सिद्धान्तों के आधार पर विकसित किया है जो इस प्रकार है

① प्रेम और अहिंसा — प्रेम और अहिंसा को गाँधी जी एक प्राकृतिक सिद्धान्त के रूप में स्वीकार करते हैं। जिसके फलस्वरूप समाज में सहयोग और सह अस्तित्व कायम होता है। और समाज के विकास का प्रमुख आधार है। उनके अनुसार अहिंसा शोषण के विरुद्ध एक कारगर हथियार है।

② मानवीय मूल्यों की स्थापना! [redacted]: गाँधी जी ने यह विचार दिया कि सत्य, प्रेम, अहिंसा, सदाचार तथा सहयोग पर आधारित मूल्यों के बिना व्यक्ति की ऐसे समाज की कल्पना

नहीं की जा सकती जो बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय हो। बहुजन से गांधी जी का तात्पर्य बहुसंख्यक लोगों लोगों से न हो कर समस्त जनता से है।

(3) अन्त्योदय : अर्थात समाज में अन्तिम व्यक्ति के उत्थान के विकास को आरम्भ करना। विकास की प्रक्रिया में सब से पहले अर्थात उन व्यक्तियों के विकास को सबसे अधिक आवश्यक माना जो सामाजिक और आर्थिक रूप से सबसे अधिक कमजोर हैं। और उनके समय में सबसे कमजोर वह वर्ग था जिसे अस्पृश्य समझा जाता था। इसलिये उन्होंने हरिजन उद्धार को सर्वोदय के प्रमुख सिद्धान्त के रूप में स्वीकार किया है।

सर्वोदय समाज की संरचना

सर्वोदय समाज चार महत्वपूर्ण इकाइयों की चर्चा इस प्रकार की जा सकती है।

(1) ग्राम स्वराज्य! गांधी जी ने सर्वोदय समाज की संरचना में ग्रामों को सब से अधिक बल दिया है। इस संदर्भ में उन्होंने यह विचार दिया कि ग्रामीण भूमि पर किसी एक व्यक्ति का अधिकार नहीं होगा बल्कि भूमि उन सभी किसानों की होगी जो सहकारिता के आधार पर उस भूमि पर खेती करेंगे। उन्हों ने ग्राम पंचायतों को भूमि के आवंटन और पटटी भूमि के पूर्ण अधिकार को उचित मानते हुये शक्ति के विकेन्द्रीकरण को आवश्यक माना है। इसी को उन्होंने ग्राम स्वराज्य कहा जो समाज की संरचना की मूल इकाई है।

Scanned with CamScanner

(3) प्रशासनिक [illegible] ! [illegible] [illegible] [illegible]
समाज में प्रशासन के [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जाता है।

(4) शिक्षा : इसने आधुनिक शिक्षा [illegible] सम्पूर्ण
[illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible]
और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पर British
[illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] शिक्षा
के [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]।

(5) [illegible] : साम्प्रदायिक [illegible] में [illegible]
[illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] से
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

साम्प्रदायिकता का उदय

(1) [illegible]
(2) आत्म अनुशासन में वृद्धि
(3) [illegible]
(4) [illegible] [illegible]

यह साम्प्रदायिक समाज को
[illegible] समाज में [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के रूप
में [illegible] [illegible] है।

—x—